ISBN: 978-93-85895-08-1

तमसो मा ज्योतिर्गमय

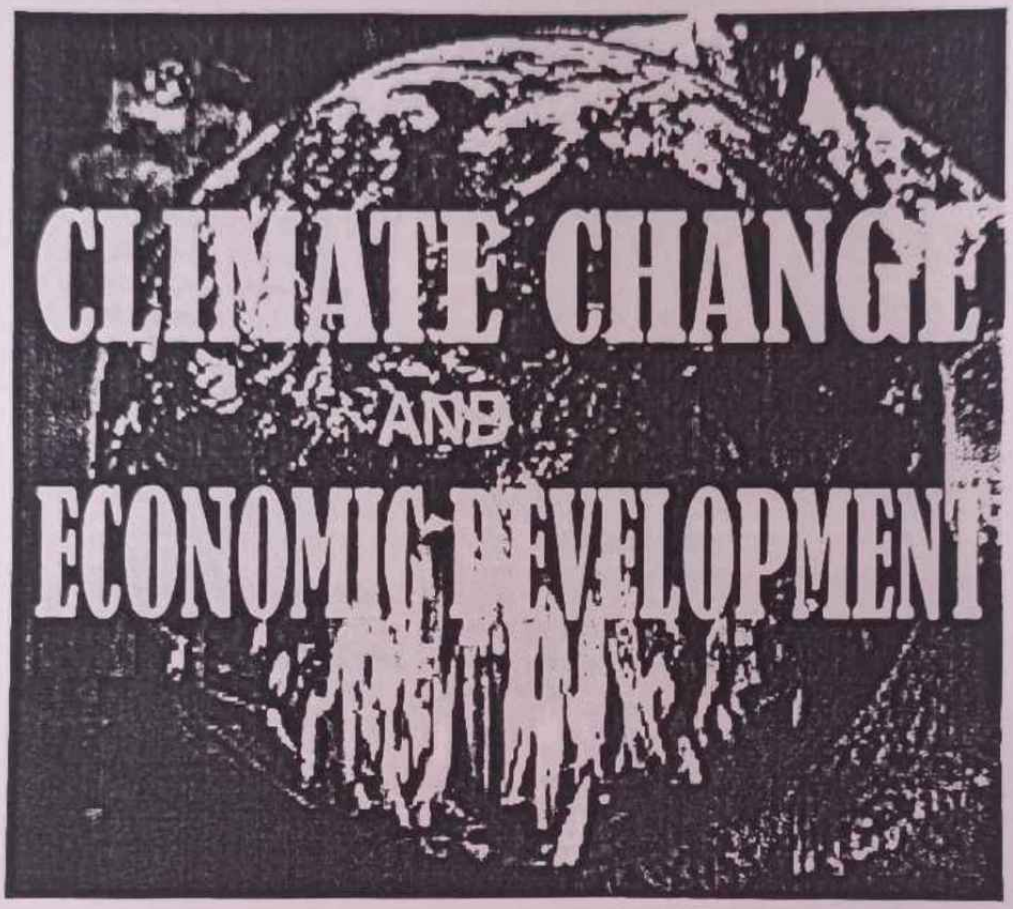

CLIMATE CHANGE AND ECONOMIC DEVELOPMENT

6-7 FEB. 2016

ORGANIZED BY

GOVT. KAMLA NEHRU MAHILA MAHAVIDYALAYA DAMOH (M.P.)

PATRON/PRINCIPAL

Dr. K. P. Ahirwar

COMPILED & EDITED BY

Dr. D.K. NEMA & TULSIRAM DAHAYAT

अनुक्रमणिका

स.क्र.	नाम	[illegible]	पृष्ठ संख्या
1	अरुण तिवारी	क्यों [illegible]	2
2	डॉ. के.पी. अहिरवार	जलवायु का [illegible]	8
3	डॉ.डी.के.नेमा	कृषि और जलवायु [illegible]	14
4	तुलसीराम दहायत	जलवायु परिवर्तन [illegible] प्रभाव	19
5	डॉ.निशा मिश्रा	भारतीय कृषि [illegible]	26
6	Rakesh Singh, Dr.S.B.Agrawal,	CHANGING [illegible] FARMING	31
7	डॉ. मनीषा दुबे एवं शैलेन्द्र आचार्य	जलवायु परिवर्तन [illegible] । एक अध्ययन	35
8	डॉ. आराधना श्रीवास	आपदा और [illegible]	42
9	Dr.Narendra Singh Yadav (Librarian)	Effect of Climate Change on [illegible] Food	46
10	Dr. Keshav Tekam & Pratibha Nigam	Climate [illegible]	52
11	डॉ. उत्सव आनन्द अभिलाषा साहू	जलवायु परिवर्तन [illegible] विकास की भूमिका	55
12	Dr. Ramesh Prasad Aharwal, Dr. K.S. Bamnia	CLIMATE CHANGE AND ITS IMPACTS ON HUMAN HEALTH	60
13	डॉ अरविन्द जैन	पर्यावरण के प्रति जागरूकता	63
14	Arshia Khan, Dr. Shirin Khan, Shilpa Tripath	Organic solid waste management from religious places A review	69
15	Dr. Anamika Jain	Food, Climate and Industrialization	74
16	Devendra N. Pandey Hemlata Verma and Sandeep Kumar Shukla	Environmental Impact Assessment Aspects, Objectives and Benefits	80
17	Dr Rajula Albert	IMPACT OF CLIMATE CHANGES	87
18	Poonam Mishra	Climate Change and Its Effect on Tourism	97
19	हरिनारायण विश्वकर्मा	भारत मे परम्परागत जल स्रोत के साधन एव संकट	103
20	Dr .kiran Dubey& Ms. Usha Soni	Environmental impact of Cement Industries	107
21	Arunabh Sen	Information Technology In Prediction Of Climate Change	110
22	Shweta Singh	The global warming : effect on climate change	115
23	मुनमुन सेन	जलवायु परिवर्तन का कृषि पर प्रभाव	117
24	डॉ. भावना यादव	जलवायु परिवर्तन का प्रभाव	119
25	डॉ. पी.के.बिदौल्या	जलवायु परिवर्तन एवं मानव जीवन	123
26	डॉ. प्रीति पचौरी	जलवायु परिवर्तन एवं कृषि	126
27	Dr P.L. Jain, Sakshee Pandey, and Rachna Patel	ENERGY MANAGEMENT AND CLIMATE CHANGE	129
28	डॉ0आकांक्षा जैन	जनसंख्या एवं पर्यावरण भारत के संदर्भ में	134
29	डॉ रेखा जैन	जलवायु परिवर्तन एवं आपदा प्रबंधन	136
30	[illegible] अहिरवार	जलवायु परिवर्तन का [illegible]	138
31	[illegible]	जलवायु परिवर्तन एवं [illegible]	140
32	[illegible]	जलवायु परिवर्तन [illegible]	142
33	डॉ [illegible]	[illegible]	146
34	डॉ. [illegible]	[illegible]	149
[illegible]	डॉ.[illegible]	[illegible]	152
[illegible]	डॉ. [illegible]	[illegible]	156
[illegible]	[illegible]	[illegible]	158
[illegible]	[illegible]	[illegible]	162
[illegible]	[illegible]	[illegible] । एक अध्ययन	168

जलवायु परिवर्तन समस्या समाधान में धारणीय विकास की भूमिका

• डॉ. उत्तराव आनन्द (सहायक प्राध्यापक)
•• अभिलाषा साहू, (शोधार्थी)
अर्थशास्त्र विभाग, डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय,सागर
(म.प्र.)

पर्यावरण और विकास मानव जीवन का आधार है। पर्यावरणीय संतुलन विकास मार्ग को प्रशस्त करता है, वहीं दूसरी ओर पर्यावरणीय असंतुलन मानव एवं मानव साधनो के विनाश का कारण भी होता है। अतः पर्यावरण हमारे जीवन को प्रभावित करने वाले सभी जैविक और अजैविक तत्वों, तथ्यों, प्रक्रियाओं व घटनाओं के समुच्चय से निर्मित इकाई है। पर्यावरणीय समस्याएं जैसे प्रदूषण, जलवायु परिवर्तन, आदि मनुष्य को अपनी जीवनशैली के बारे में पुनर्विचार के लिए प्रेरित कर रहे है। मानव वैज्ञानिक और तकनीकी रूप से अपने द्वारा किए गए परिवर्तनों से नुकसान को कम करने में कितना सफल है, आर्थिक और राजनैतिक हितों की टकराहट में पर्यावरण पर कितना ध्यान दिया जा रहा है और मानव अपने पर्यावरण के प्रति कितना जागरूक है, यह आज का ज्वलंत प्रश्न है। आधुनिक विकास की गतिविधियॉ जैसे बांधो, सड़कों, खदानों, उद्योगों और पर्यटन विकास के कारण बहुत से जीवों के प्राकृतिक आवास नष्ट हो गए है, साथ ही वनस्पतियों एवं जन्तुओं की प्रजातियां आज विलुप्त होने की कगार पर पहुँच गई है। अतः धारणीय विकास की संकल्पना के अन्तर्गत वर्तमान समय में इन प्रजातियों के संरक्षण एवं विस्तार को बढ़ावा दिए जाने की आवश्यकता है ताकि पारिस्थितिक संतुलन बना रहे।

धारणीय विकास

आधुनिक विकास ने संसाधनों के साथ–साथ पर्यावरण को भी बुरी तरह प्रभावित किया है। जिससे घटते प्राकृतिक संसाधन व बढ़ते पर्यावरण प्रदूषण के कारण धारणीय विकास की अवधारणा का जन्म हुआ। इसको निर्वहनीय विकास, सतत् विकास, संपोषित विकास आदि नाम से भी जानते है।

धारणीय विकास की अवधारणा का प्रारम्भ सन् 1962 में वैज्ञानिक रॉकल कारसन की पुस्तक 'दी साइलेंट स्प्रिंग' तथा सन् 1968 में जीव वैज्ञानिक पॉल इरलिच की पुस्तक 'पॉपुलेशन बम' से हुआ लेकिन इस शब्द का वास्तविक विकास सन् 1987 में ब्रंटलैण्ड की रिपोर्ट, हमारा सांझा भविष्य के प्रकाशन के साथ हुआ। धारणीय विकास की नई अवधारणा का उद्गम सन् 1992 में ब्राजील की राजधानी रियो डि जेनेरियो में आयोजित पृथ्वी सम्मेलन से माना जाता है, जिसमें स्पष्ट किया कि पर्यावरण एवं विकास के मध्य गहरा संबंध है।

"धारणीय विकास एक ऐसा विकास है जो वर्तमान पीढी के साथ भावी पीढी की आवश्यकताओं की पूर्ति भी सुनिश्चित करता है। इसके अंतर्गत संसाधनों का सीमित उपयोग उनके संरक्षण पर विशेष ध्यान दिया जाता है, ताकि भावी पीढ़ियां भी लाभांवित हो सकें।"

धारणीय विकास का आदर्श माडल बताता है कि आर्थिक विकास के साथ साथ पर्यावरण को भी सुरक्षित करना, वर्तमान और भविष्य की पीढियों के लिए प्राकृतिक संसाधनों को सुरक्षित रखते हुए इस प्रकार उपयोग करना ताकि प्राकृतिक संसाधनों का न्यूनतम क्षरण हो।

जलवायु परिवर्तन

"जलवायु परिवर्तन औसत मौसमी दशाओं के पैटर्न में ऐतिहासिक रूप से बदलाव आने को कहते हैं, जलवायु में यह परिवर्तन प्राकृतिक भी हो सकता है, और मानव क्रियाओं का परिणाम भी।"

गर्मी के मौसम में गर्मी एवं सर्दी के मौसम में सर्दी लगना स्वभाविक है, यह मौसम में होने वाले बदलाव के कारण होता है। मौसम, किसी भी स्थान की औसत जलवायु होती है, जिसे निर्धारित करने वाले मानको में वर्षा, सूर्य प्रकाश, हवा, नमी व तापमान